हज के मौक़े पर रसूलुल्लाह (स०) का ख़ुतबा

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादकः सैय्यद आसिफ़ अब्बास नौगाँवी

रसूले इस्लाम[स०] का मक़ामे अरफ़ात में क़याम था। ये 10 हिजरी में हज्जतुल विदा यानी हज़रत[स०] के आख़री हज का ज़माना था अपने कम्मल के ख़ेमे से निकल कर शहंशाहे दो आलम मैदान की तरफ़ अपनी मशहूर ऊँटनी क़सवा पर सवार होकर तशरीफ़ लाए और वह अज़ीम ख़ुतबा इरशाद किया जो क़यामत तक दुनिया वालों को याद रहेगा सामने आदमियों का एक सैलाब था आपने फ़रमाया जिसका ख़ुलासा यह हैः-

आगाह हो जाओ! जाहिलियत यानी इस्लाम की रौशनी से पहले के तमाम दस्तूर और तरीक़े मेरे दोनों पैरों के नीचे हैं। इन अलफ़ाज़ के साथ आपने जाहिलियत के ज़माने की सारी बेहूदा रसमों को मिटाने का एलान किया। फिर इंसान की तरक़्क़ी की राह में एक बहुत बड़ी चीज़ हायल थी और वह ख़ानदान, नस्ल, रंग, दौलत व हुकूमत, ज़बान और क़ौम व मुल्क का फ़र्क़ था आज तमाम इम्तियाज़ और हर क़िस्म की तफ़रीक़ ख़त्म कर दी गई।

पैग़म्बरे अकरम[स०] ने इरशाद फ़रमाया लोगो! बेशक तुम्हारा परवरदिगार एक है और बेशक तुम्हारा बाप एक है। (यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम) हाँ अरबी को अजमी पर और अजमी को अरबी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़वा के सबब, आपने फ़रमाया कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और तमाम मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं। तुम्हारे गुलाम! तुम्हारे गुलाम! जो ख़ुद खाओ वही उनको खिलाओ और जो ख़ुद पहनो वही उनको पहनाओ।

अरबों में क़दीम ज़माने से यह दस्तूर चला आता था कि किसी घराने का कोई आदमी अगर क़त्ल कर दिया जाता था तो उसका इंतेक़ाम लेना उनका ख़ानदानी फ़र्ज़ बन जाता था जिसका नतीजा यह था कि बरसों आपस में लड़ाईयाँ जारी रहती थीं और यह सिलसिला कभी ख़त्म होने को न आता था और इस वजह से हर तरफ़ बदअमनी और फ़सादात फैलते रहते थे रसूले अकरम[स०] ने इसके मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाया, जाहिलियत की ज़माने के तमाम ख़ून यानी उनके इंतेक़ाम अब बातिल हो गए। और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का ख़ून यानी रबीआ बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब के बेटे का ख़ून बातिल करता हूँ। मतलब यह था कि अब उसका कोई इंतेक़ाम न लिया जायगा। रबीआ जो आंहज़रत[स०] के चचाज़ाद भाई थे उनका दूध पीता बच्चा जिसका नाम एयास मशहूर है वह क़बीला बनी साद में परवरिश पा रहा था कि क़बीला हुज़ैल के किसी शख़्स ने उसको क़त्ल कर डाला। ख़ुद रबीआ बिन हारिस ज़मान-ए-रिसालतमआब के बाद तक ज़िन्दा रहे, और 23 हिजरी में वफ़ात पाई।

इसी तरह आप ने ज़मान-ए-जाहिलियत के सभी सूद के हिसाब भी बातिल कर दिये और एलान किया कि सबसे पहले मैं अपने चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के इस तरह के सारे मुतालबात बातिल करता हूँ।

इन बातों के अलावा उस वक़्त तक औरतों को अपने जायदाद की तरह समझा जाता था। रसूले इस्लाम[स०] ने इस अज़ीम और यादगार ख़ुतबे में औरतों के हुक़ूक़ से लोगों को आगाह कर दिया और फ़रमाया, ''औरतों के मामले में ख़ुदा से डरो, तुम्हारा औरतों पर हक़ है

और औरतों का तुम पर हक़ है।''

सब लोग जानते हैं कि इस्लाम से पहले अरब क़ौम में माल और जान की कोई क़ीमत न थी लूट और क़त्ल का बाज़ार गर्म रहता था जो शख़्स जिस किसी का माल चाहता था छीन लेता था और जिसको चाहता था मार डालता था कोई इंसाफ़ था और न कोई क़ानूनी निज़ाम था जिस से कमज़ोरों की जानों और उनके माल की हिफ़ाज़त की जा सकती। अम्नो सलामती के इस अज़ीम पैग़म्बर ने अपनी इस इस्लाह व हिदायत से भरी हुई तक़रीर में फ़रमाया तुम्हारे ख़ून और तुम्हारे माल उसी तरह मोहतरम हैं जिस तरह यह दिन (दसवीं ज़िलहिज्जह) इस महीने में और इस शहर में हराम है यानी मोहतरम है। मतलब यह था कि अब तुम्हारे ख़ून बग़ैर शरई और क़ानूनी जवाज़ के नहीं बहाए जा सकते और न कोई किसी का माल नाहक़ तरीक़े पर ले सकता है वरना वह बड़ा हो या छोटा हो हाकिम हो महकूम हो। सरदारे क़बीला हो या मामूली आदमी हो क़ानून की पकड़ से बच न सकेगा और उस सज़ा का मुस्तहक़ होगा जो उसके लिए मुक़र्रर कर दी गई है।

इसके बाद सरदारे अम्बिया ने दूसरे अहकामे शरीअत की तालीम दी। फिर हज़ारहा इंसानों के मजमे से फ़रमाया, तुम से ख़ुदा के यहाँ मेरी निस्बत दरयाफ़्त किया जायेगा तो तुम क्या जवाब दोगे?

सहाबा ने अर्ज़ की हम इसका यह जवाब देंगे कि आप ने अल्लाह का हुक्म और पैग़ाम हम तक पहुँचा दिया और अपने फ़र्ज़ को अदा कर दिया।

यह सुन कर हुज़ूरे अनवर ने आसमान की तरफ़ उंगली उठाई और तीन बार फ़रमाया ''ऐ ख़ुदा तू गवाह रहना''।

जिस वक़्त सरकारे दो आलम यह यादगार ख़ुतबा इरशाद फ़रमा रहे थे और ख़ुदाई अहकाम पहुँचा रहे थे उस वक़्त बजाए लाखों रुपये के तख़्ते शाही या क़ीमती शाहाना मसनद के हुज़ूर एक मामूली से फ़र्श पर बैठे हुए थे जो आपकी ऊँटनी पर पड़ा हुआ था।

शेष...... महान अन्तर्राष्ट्रीय शहीद

छः महीने का अली असग़र भी रणक्षेत्र में लाया गया।

इस से मालूम हुआ कि दूसरों के साथ जिहाद करने में जो शर्तें हैं वह अपनों से जिहाद करने में उनका भी ख़याल नहीं किया गया। बल्कि तमाम कड़ी से कड़ी मुसीबतें इस सम्बन्ध में सही गईं।

इमाम हुसैन ने दुनिया को जो सार्वलौकिक मानवी कर्तव्यों की शिक्षा दी है वह आधुनिक काल में भूले हुए पुरुषार्थ की याद दिलाने के लिए काफ़ी है। पानी रसद (युझ सामग्री) का सबसे अधिक महत्वपूर्ण सामान होने के नाते सब से अधिक क़ीमती और आवश्यक था और दुश्मन को पानी पिलाकर ताक़त देना प्रत्यक्ष रूप से अपने को कमज़ोर करना है लेकिन इमाम हुसैन ने हुर की सेना को पानी पिला कर प्रकट किया कि यद्यपि वे दुश्मन थे मगर मानवजाति के ही व्यक्ति थे और प्यासे थे इसलिए पानी उनसे बचा नहीं रक्खा जा सकता। यह नहीं कि केवल हुक्म दे दिया हो जैसा कि अधिक्तर लीडर करते हैं कि ज़बानी शिक्षा देते हैं और अगर उस पर अमल न किया गया तो यह कहते हैं कि हमने तो कह दिया था पर पार्टी वालों ने कहना न माना। बल्कि इस सच्चे पथ-प्रर्दशक की शान तो यह थी कि खुद कुर्सी बिछाकर अपने सामने पानी पिलवाने लगे। निस्सन्देह इमाम हुसैन के साथी वही करते जो वह आज्ञा देते लेकिन इमाम हुसैन ने खुद अपने कर्तव्य का पालन भी करना आवश्यक जाना।

अली बिन तआन मुहारिबी (जो हुर की फ़ौज के साथ आया था) कहता है कि ''मैं बहुत प्यास था। हुसैन ने इस बात को ज्ञात किया और कहा कि 'ऐ शख़्स उस ऊँट पा पानी है पली ले' मैं गया लेकिन प्यास की तेज़ी के कारण मश्क का दहाना अपने मुँह से ठीक से लगा न सका और पानी गिरने लगा। हुसैन खुद उठे ओर मश्क का दहाना ठीक करके मुझे पानी पिलाया।''

यह, और इसी प्रकार की दूसरी बहुत सी शिक्षाएं हैं, जिनके आधार पर हम यह कहते हैं कि ''हुसैन का व्यक्तित्व, तमाम पक्षपातों और जाति भेदों से ऊँचा है।''